# संपादकीय

प्रिय पाठको! अप्रैल माह हमारे देश की सांस्कृतिक विविधता को आनंद एवं उल्लास के साथ मनाने का माह है अर्थात इस माह में अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। उन्हीं त्यौहारों के बीच विद्यार्थियों की परीक्षा भी आ जाती है, जो उन्हें तनाव महसूस कराती है। इसी तनाव पर माननीय प्रधानमंत्री ने 'परीक्षा पे चर्चा' के पाँचवें संस्करण (01 अप्रैल, 2022) में विद्यार्थियों से कहा, "परीक्षा को भी आप त्यौहार बना दें। परीक्षा को त्यौहारों जैसे रंगों, उमंग एवं उत्साह से भर दें।" यही सरोकार *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी अपनाया गया है, जिसमें परीक्षा को तनावमुक्त, लचीला तथा सुगम बनाने पर बल दिया गया है। पत्रिका का यह अंक भी *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं के विभिन्न घटकों, जैसे— अध्यापक शिक्षा, समावेशी शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षा, अध्यापकों का सतत पेशेवर विकास, मुक्त शैक्षिक संसाधन आदि को विभिन्न लेखों एवं शोध पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

'विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य की ओर बढ़ते कदम' नामक लेख में मानसिक स्वास्थ्य की व्याख्या करते हुए विद्यार्थियों के स्वस्थ मानसिक स्वास्थ्य में अध्यापक की परामर्शदाता के रूप में भूमिका, अभिभावकों की ज़िम्मेदारी, मनोचिकित्सक का उत्तरदायित्व आदि की चर्चा की गई है। साथ ही, इस दिशा में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की पहल 'मनोदर्पण' का उल्लेख किया गया है।

वहीं लेख 'समावेशी शिक्षा के संदर्भ में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में निहित प्रावधानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' में बताया गया है कि समावेशी शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था के केंद्र में स्थापित किया जाए। इसी समावेशन की प्रक्रिया में नगरीय मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चे भी आते हैं। इन बच्चों की अधिगम पारिस्थितिकी में अभिभावकों का जुड़ाव, परिवारों के घरेलू अधिगम परिवेश, विद्यालयेतर परिवेश और विद्यालयी कार्यों की पारस्परिकता तथा जनसंचार एवं डिजिटल माध्यमों के साथ बच्चों के जुड़ाव की व्याख्या शोध पत्र 'नगरीय मध्यमवर्गीय बच्चों की विद्यालयेतर अधिगम पारिस्थितिकी' में की गई है।

साथ ही *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भारत की ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर तैयार की गई है। यह नीति भारत के पुनर्निर्माण पर बल देते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण को बढ़ावा देती है। इसी पर आधारित लेख 'भारत के भविष्य के आधार अध्यापक नहीं आचार्य' में भारतीय दृष्टि एवं राष्ट्र निर्माण में आचार्य की भूमिका तथा वर्तमान संदर्भ में आचार्य तैयार करने की कार्ययोजना पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में महात्मा गाँधी के शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्त किए गए विचारों तथा सुझावों, जैसे— शैक्षिक समानता, अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा, सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण, मातृभाषा, हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा आदि का समावेशन लेख '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में महात्मा गाँधी के शिक्षा-दर्शन का समावेशन' में प्रस्तुत किया गया है। जबकि लेख 'अध्यापक शिक्षा पर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं का विश्लेषण एवं क्रियान्वयन की संभावित रूपरेखा' में अध्यापक शिक्षा के नए स्वरूप के समस्त पहलुओं

एवं संभावित परिवर्तनों हेतु उल्लिखित महत्वपूर्ण सिफ़ारिशों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सतत पेशेवर विकास किसी भी पेशेवर व्यक्ति के लिए जीवनपर्यंत सीखने का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसमें सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में इन्हीं कार्यक्रमों अर्थात सतत पेशेवर विकास कार्यक्रमों में अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम चयन करने के लिए अधिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता प्रदान की गई है। इसी पर आधारित लेख 'अध्यापकों के लिए 50 घंटे का सतत पेशेवर विकास कार्यक्रम— एक सुझावात्मक मॉडल' अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार एक वर्ष में 50 घंटे का सतत पेशेवर विकास कार्यक्रम पूरा करने के लिए एक स्वायत्त एवं लचीला मॉडल सुझाता है।

अवधारणा मानचित्रण (कांसेप्ट मैपिंग) अवधारणाओं को एक चित्र या ग्राफिक्स के रूप में अर्थपूर्ण तरीके से व्यवस्थित करने की एक प्रभावी तकनीक है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'अवधारणा मानचित्रण द्वारा विद्यार्थियों में चिंतनशील सोच का अध्ययन' दिया गया है। यह शोध पत्र बताता है कि अवधारणा मानचित्रण विद्यार्थियों में मननशीलता (रिफ्लेक्शन) की क्षमता को बढ़ावा देने का एक प्रभावी उपकरण है।

वहीं लेख 'विद्यार्थियों में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता' में बताया गया है कि मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा शिक्षण एवं अधिगम के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों से निपटने में कुछ सीमा तक मदद मिली है। जबकि शोध पत्र 'एकलव्य संस्था के नवाचारी शिक्षणशास्त्रीय अभ्यास का कथात्मक व्यष्टि अध्ययन— एक विश्लेषण' में एकलव्य संस्था में किए जा रहे नवीन शिक्षणशास्त्रीय प्रयासों को एक कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके लिए शोधार्थी द्वारा समावेशी शिक्षा के घटकों को ध्यान में रखते हुए एकलव्य संस्था में कार्यरत अध्यापकों से जानकारी संकलित की गई है। यह अध्यापकों को अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को समावेशी एवं रुचिकर बनाने में सक्षम बनाएगी।

शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी यौगिक शब्दावली एवं क्रियाओं के प्रति अबोध होते हैं। इस हेतु बच्चों को हिंदी भाषी यौगिक वर्णमाला चार्ट की सहायता से भाषा की बुनियादी समझ एवं यौगिक क्रियाओं की गतिविधि से योग शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'हिंदी भाषी यौगिक वर्णमाला चार्ट— भाषा एवं यौगिक ज्ञान का सरलीकरण' दिया गया है, जो *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के विभिन्न अनुच्छेदों में वर्णित मानवीय और संवैधानिक मूल्यों का बीजारोपण करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

इस अंक के अंत में, एक पुस्तक समीक्षा 'शिक्षा मतारोपण का नहीं बल्कि प्रश्नानुकूल मस्तिष्क के विकास का माध्यम' नामक शीर्षक के साथ प्रस्तुत की गई है, जो नंदकिशोर आचार्य की पुस्तक *शिक्षा का सत्याग्रह* पर आधारित है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

*अकादमिक संपादकीय समिति*